CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

शोध-पत्र

Received 11.02.2023 Reviewed 07.03.2023 Accepted 31.03.2023

पर्यावरण अवनयन तथा सतत विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*डॉ शंकर लाल चौपड़ा

मुख्य शब्द – *पर्यावरणीय ह्रास, अनुरक्षण, परिरक्षण, पोषणीयता अवनयन, संरक्षणवादी, संरक्षण आदि.*

सारांश

पृथ्वी तथा इसके निवासियों का भविष्य हमारी क्षमताओं से संबद्ध पर्यावरणीय अनुरक्षण (Maintenance) तथा परिरक्षण (Preservation) पर निर्भर करता है। इसी संदर्भ में पर्यावरण के दीर्घावधिक उपयोग एवं अभिवृद्धि के लिये संघृत विकास की संकल्पना का विकास हुआ है। 1990 के दशक में यह माना जाने लगा कि पर्यावरणीय संसाधनों के अतिदोहन या अविवेकपूर्ण तरीकों से उपयोग करने पर पर्यावरणीय ह्रास तथा अस्थिरता उत्पन्न हो रही है। यह सर्वाधिक विकासशील देशों में देखा गया है।

पोषणीयता या संघृतता (Sustainability) सभी प्राकृतिक पर्यावरणीय तंत्रों का एक अन्तर्निमित लक्षण है, जो मानवीय हस्तक्षेप को न्यूनतम स्तर पर स्वीकार करता है। यह किसी तंत्र की क्षमता तथा उसके सतत प्रवाह को अनुरक्षित (Maintain) रखने के लिये संबद्ध करता है, जिसके फलस्वरूप वह तंत्र अपना स्वस्थ अस्तित्व रख पाता है। पर्यावरणीय संसाधनों के मानवीय उपयोग तथा पर्यावरणीय तंत्रों में हस्तक्षेप के कारण यह अन्तः निर्मित क्षमता विकृत हो जाती है, जो इसे असंघृत (Unsustainable) बना देती है।

इसके विपरीत अर्थशास्त्रियों का तर्क है कि संसाधनों के दोहन तथा अवनयन से शोध एवं विकास को बढ़ावा मिलता है तथा संसाधनों के नए विकल्पों के बारे में खोज की ओर अग्रसर होते हैं, लेकिन हर सम्भावना की भी एक सीमा होती है। संरक्षणवादी एवं पारिस्थितिकीविद एक लम्बे समय से प्राकृतिक पर्यावरणीय तंत्रों में विद्यमान पोषणीयता से अवगत थे, लेकिन संघृत विकास की संकल्पना का विकास दो दशक पूर्व ही हुआ। संघृत विकास (sustainable Development) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग विश्व संरक्षण रणनीति में 1980 में किया गया, लेकिन यह विस्तार से 1987 में पर्यावरण एवं विकास पर विश्व आयोग द्वारा प्रचारित किया गया।

"भावी पीढ़ी की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता में ह्रास किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करना ही संघृत विकास है।"

प्रस्तावना

पर्यावरण अवनयन से तात्पर्य पर्यावरण के विभिन्न घटकों यथा मृदा वायु जल तथा जैवविविधता के वास्तविक गुणों एवं विशेषताओं में होने वाले अवांछनीय परिवर्तन से है। प्रकृति में सामान्य परिस्थितियों में अवनयन एवं निर्माणकारी प्रक्रियाएँ एक चक्रीय रूप से घटित होती रहती है व उनमें सन्तुलन की स्थिति बनी रहती है। पर्यावरण अवनयन मनुष्य के क्रियाकलापों द्वारा पर्यावरण के संघटकों की आधारभूत संरचना में प्रतिकूल परिवर्तनों के कारण पर्यावरण की गुणवत्ता में इस सीमा तक ह्रास होना कि इन प्रतिकूल परिवर्तनों का जैविक समुदाय तथा मानव समाज पर गहरा प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है। पर्यावरण अवनयन के कारण पारिस्थितिक तंत्र एवं पारिस्थितिकी की विविधता में कमी होने से पारिस्थितिकीय एवं पर्यावरणीय असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है।

पर्यावरण पृथ्वी पर वह प्रवृत्ति है जो मानव को चारों ओर से घेरे हुए है अर्थात् हमारे चारों ओर प्रकृति में जो दिखाई देता है जैसे जल वायु मिट्टी पौधे प्राणी तथा समस्त दशाए मनुष्य को किसी न किसी रूप में प्रभावित करती है। मानव जीवन जिन दशाओं पर निर्भर रहता है। भौतिक जैविक सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के कारण पर्यावरण के तत्वों में कमी एवं वृद्धि के अवनयन की समस्या उत्पन्न होती है। भौतिक संसाधनों का प्रयोग मानव के ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी विकास पर आधारित रहा है जब तक प्रकृति के सहयोग से मानव अपनी आवश्यकता की पूर्ति करता रहा, तब तक पर्यावरण सन्तुलन बना रहा है लेकिन आधुनिक समाज में बढ़ती हुई जनसंख्या बढ़ता भौतिकवाद उच्च तकनीकी और प्रकृति के प्रति व्यवहार की प्रगति की रफ्तारने संसाधन दोहन अत्यधिक ऊर्जा प्रयोग औद्योगिकीकरण शहरीकरण सोर मण्डलीय क्रियाकलाप ने पर्यावरण असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न किया है।

आज सम्पूर्ण विश्व में विकास की अन्धी प्रवृत्ति के पर्यावरण को असन्तुलित करती जा रही है। इसी का परिणाम चक्रवात बाढ़ सूखा भूस्खलन वनों में आग लगने की घटनाए दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। प्रकृति आपदाओं से नुकसान को कम करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने पिछले दशक (1990-1999) को अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा न्यूनीकरण दशक के रूप में बनाया है। भारत सरकार प्राकृतिक आपदा दिवस अक्टूबर का दिन राष्ट्रीय आपदा न्यूनीकरण दिवस के रूप मे मनाने का फैसला किया तथा 1999 में इसी दिन ओडिसा में महाविनाशकारी चक्रवात आया था, जिससे अपार जन-धन की हानि हुई थी । राष्ट्रीय

आपदा न्यूनीकरण दिवस के बारे में जागरूकता पैदा करना तथा उनसे निपटने के लिए तैयार रहकर नुकसान कम किया जा सकता है।

वर्तमान समय में इस तकनीक प्रधान वैश्वीकरण युग में मानवीय गतिविधियों के कारण प्राकृतिक संसाधनों के अतिदोहन से यह चक्र असन्तुलित हो रहा है। भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन औद्योगीकरण, नगरीकरण की तीव्र दर,उपभोक्तावादी संस्कृति ने पर्यावरण अवनयन की दर को तीव्र गति प्रदान किया है। जिसका परिणाम स्वरूप पर्यावरण असन्तुलन के रूप में सामने दिखाई दे रहे है। विशेषकर 20 वीं शताब्दी के मध्य के बाद में पर्यावरणीय समस्याओं ने वैश्विक स्वरूप धारण कर लिया है। यही कारण है कि 1987 में पर्यावरण और विकास पर ठतनदज सं्दक कमीशन द्वारा सतत विकास की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए विकास की ऐसी प्रक्रिया पर जोर दिया जो वर्तमान की आवश्यकताओं से समझौता किय बिना भविष्य की जरूरतों की पूर्ति भी कर सके।

अध्ययन क्षेत्र में पर्यावरण अवनयन के प्रभावों का कारण

अध्ययन क्षेत्र सहित पर्यावरण अवनयन तथा उससे जनित विश्वव्यापी पर्यावरणीय संकट सर्वप्रथम कारण मनुष्य तथा प्राकृतिक पर्यावरण के बीच तेजी से बिगड़ता सम्बन्धए वास्तव में प्राकृतिक संसाधनों का मानव द्वारा तेजी से विदोहन, प्रौद्योगिकी विकास, तीव्र औद्योगिक एवं नगरीकरण के फलस्वरूप पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव दिखाई देने लगे। आर0 एफ0 दासमैन ने कहा मानव दौड़ हाथ में ग्रेनेड लिए बन्दर के समान है कोई यह नहीं जानता है कि वह कब ग्रेनेड से पिन खीच लेगा तथा विश्व तहस-नहस हो जायेगा। इस प्रकार शोधार्थी अपने शोध अध्ययन क्षेत्र सहित सम्पूर्ण विश्व के सन्दर्भ में पर्यावरण अवनयन के प्रभावों के कारणों को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्वष्ट किया गया है।

जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण अवनयन

शोध अध्ययन सहित विश्व में बढ़ती जनसंख्या व इसके परिणामस्वरूप विभिन्न गतिविधियों से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। शोध क्षेत्र आजमगढ़ जनपद में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण मानवीय क्रियायें प्राकृतिक संसाधनों ,तीव्र गति से विदोहन के फलस्वरूप पर्यावरण अवनयन की समस्या बढ़ती जा रही है। जिससे खाद्यान्न में कमी, आवास की समस्या आदि पर्यावरण पर जनसंख्या वृद्धि के ऐसे कुप्रभाव जैसे पर्यावरण अवनयन को समझने से पहले पारिस्थितिकी मण्डल की संकल्पना भली-भाॅति समझ लेना आवश्यक है। ऐसा प्रतीत होता है कि बढ़ती जनसंख्या वृद्धि पर चिन्ता करनी होगी और भविष्य में विश्व जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करके हम पर्यावरण अवनयन की समस्या काफी हद तक कम कर सकते है।

वन विनाश एवं पर्यावरण अवनयन

अध्ययन क्षेत्र में वन सम्पदा किसी राष्ट्र की धरोहर होती है क्योंकि वनों से उद्योगों के लिए कच्चे माल, भवन निर्माण सामग्री, हवा, जीव-जन्तु के आवास, वर्षा, कार्बन डाई आक्साॅइड का सुरक्षा कवच आदि । यह घोर चिन्ता का विषय है कि अध्ययन क्षेत्र चौमु के कुल क्षेत्रफल का 248 हे0 भूमि वन पाये जाते है। कभी यह धरातल वैदिक काल में वनों घना वसा हुआ है लेकिन मानव के आर्थिक क्रियाकलाप दिन प्रतिदिन वनो का विनाश करते जा रहे है और पर्यावरणीय अवनयन में वृद्धि होती जा रही है। शोधार्थी जनपद एवं विकासखण्ड स्तर पर वनों के घटते क्षेत्रफल तथा पर्यावरण की बढ़ती समस्या से अवगत अध्ययन क्षेत्र में जनमानस को अवगत कराना चाहता है।

कृषि विकास एवं पर्यावरण अवनयन

शोध क्षेत्र जनपद आजमगढ़ कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ की 72 प्रतिशत जनसंख्या कृषि क्षेत्रों में निर्भर और आजीविका तथा रोजगार का साधन है। बढ़ती जनसंख्या के कारण भरण-पोषण के लिए कृषि क्षेत्रों में वन विनाश, मृदा प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण आदि पर्यावरण अवनयन के कारण रूप कृषि विकास को माना जाता है क्योंकि कृषि विकास के लिए भूमि का शोषण, जल का अधिक दोहन, रासायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग, कीटनाशक दवाओं का उपयोग, सभी कारक कृषि विकास के लिए माने जाते है। लेकिन सभी विकास के तत्व पर्यावरण अवनयन को बढ़ाने के मूल तत्व माने जाते है।

औद्योगिक और नगरीकरण पर्यावरण अवनयन

अध्ययन क्षेत्र के विकास के लिए औद्योगिक कारखाने अति महत्वपूर्ण माने जाते है और उद्योगों का विकास प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। प्राकृतिक संसाधनो का अत्यधिक दोहन के फलस्वरूप पर्यावरणीय समस्या का जन्म होता है। औद्योगिक विकास के फलस्वरूप नगरीकरण का विकास होता है तीव्र नगरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों का मानव तीव्र गति से अपनी आवश्यकता से अधिक उपयोग करने लगता है। जिसके फलस्वरूप पर्यावरण अवनयन की समस्या बढ़ने लगती है तीव्र औद्योगिक एवं नगरीकरण के कारण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण एवं मानव विभिन्न असाध्य रोग- टी0बी0, दमा, कैंसर, टाइफाइड, मलेरिया, डेंगू, बुखार वायरस संक्रमण बीमारियां आदि बढ़ने लगती है।

आधुनिक प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण अवनयन

आधुनिक समय मानव के विकास प्रौद्योगिकी तकनीकी विकास पर आधारित हो गया है क्योंकि अब वर्तमान आधुनिक कौशल प्रौद्योगिकी मिशन के अन्तर्गत विकास के सभी क्षेत्र तकनीक पर आधारित होते जा रहे है। प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम विदोहनए तीव्र दर से आर्थिक विकास तथा मानव समाज के भौतिक स्तर पर अत्यधिक वृद्धि ए पश्चिमी दुनिया के औद्योगिक देशो में आधुनिक प्रौद्योगिक का वैज्ञानिक विकास करके विकसित राष्ट्र बनते जा रहे हैं लेकिन बढ़ते प्रौद्योगिकी विकास के कारण आज मानव सहित सभी क्षेत्रों में विकास की तीव्र गति को आधार प्रदान किया है जैसे-शिक्षा, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि के द्वारा विकास हुआ है तथा 3-4 दिसम्बर 1984 ई0 घटित भोपाल गैस- त्रासदी तथा 1986 में यूक्रेन चरनोबिल नाभिकीय संयन्त्र फटने से बड़ी संख्या में जन-धन की हानि हुई है।

इस प्रकार शोधार्थी अपने शोध अध्ययन में पर्यावरण अवनयन के सन्दर्भ में पर्यावरणीय समस्या के प्रति चेतना जागृत किया है। पर्यावरण अवनयन की समस्या अब दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है क्योंकि मानव की असीमित आवश्यकता को नियंत्रण में न रखने के कारण पर्यावरणीय अवनयन की समस्या बढ़ रही है। महात्मा गाधी ने कहा है कि प्रकृति के अन्दर सभी मानव के भरण पोषण के पर्याप्त साधन है कि मानव की लालची प्रवृत्ति का भरण -पोषण नहीं हो सकता है।

पारिस्थितिक असन्तुलन

जैविक और पर्यावरणीय कारकों के पारस्परिक अध्ययन को पारिस्थितिकी कहते हैं। लेकिन मानवीय क्रियाओं के द्वारा इनके स□बन्धों में आए परिवर्तनों के कारण पारिस्थितिकी में असन्तुलन की उपस्थिति उत्पन्न हो गयी है।

चौमू तहसील में विविध मानवीय क्रियाओं के कारण पर्यावरण और जैविक संसाधनों के मध्य पारस्परिक स□बन्धों में आए परिवर्तन के कारण विगत कुछ वर्षों से यहाँ की पारिस्थितिकीय दशाओं में आमूल-चूल परिवर्तन आया है। पारिस्थितिकीय असन्तुलन की प्रक्रिया एक कड़ी के रूप में विकसित हुई है ।

इस प्रकार इस क्षेत्र में पारिस्थितिकीय असन्तुलन की उत्पŸिा का मु□य कारण मानव की भौतिकवादी सोच के परिणामस्वरूप पर्यावरणीय कारकों का अविवेकपूर्ण उपयोग है। चौमू तहसील में पारिस्थितिकीय असन्तुलन की स्थिति के उत्पन्न होने में नि□न स्रोत महŸवपूर्ण हैं :-

(i) प्राकृतिक वनस्पति का विनाश : चौमू तहसील में विगत दो दशकों में अन्धाधुन्ध वनोन्मूलन के द्वारा प्राकृतिक वनस्पति का सर्वाधिक विनाश किया गया है। इस क्षेत्र में वनस्पति विनाश के प्रमुख कारण नि□न हैं:-

(अ) जनसं□या वृद्धि के कारण कृषि क्षेत्र में विस्तार के लिए।

(ब) वनीय क्षेत्रों को पशुचारण के लिए चरागाह के रूप में परिवर्तन।

(स) वनों से विभिन्न उपयोगी वस्तुएँ जैसे फर्नीचर निर्माण के लिए वनों को काटा गया है।

(द) ईंधन के रूप में उपयोग करने के लिए।

(य) मोरीजा में लोह अयस्क के खनन तथा बन्दोल क्षेत्र में एनीकट निर्माण के लिए वनों को काटा गया है।

(ii) जैविक स□पदा का विनाश : चौमू तहसील में वनों के विनाश के कारण इस क्षेत्र के वनों में रहने वाले वनीय जीव-जन्तु कुछ तो पलायन करके आस-पास के वनीय क्षेत्रों में चले गए तथा अधिकांश जीव-जन्तु नष्ट हो गए जिसके कारण आहार श्रृंखला और ऊर्जा प्रवाह में असन्तुलन उत्पन्न हुआ है जिसका प्रभाव पारिस्थितिकीय असन्तुलन के रूप में प्रकट हुआ है।

(iii) पर्यावरणीय प्रदूषण : औद्योगिकरण, नगरीयकरण, परिवहन साधनों का विस्तार, भू-जल स्तर में गिरावट आदि के कारण चौमू तहसील में जल, वायु, मिट्टी, ध्वनि प्रदूषण में तेजी से वृद्धि हुई है। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव पारिस्थितिकी सन्तुलन पर पड़ा है। कृषि विस्तार तथा फसल प्रारूप में परिवर्तन, जल का अतिदोहन, यातायात साधनों में वृद्धि आदि के कारण वनों में कमी, वायु का दूषित होना, मृदा उत्पादकता का ह्रास आदि समस्याएँ इस क्षेत्र मे पारिस्थितिकी असन्तुलन की अवस्था के उत्पन्न होने में सहायक रहे हैं।

(iv) जनसं□या वृद्धि : चौमू तहसील में पारिस्थितिकी असन्तुलन के लिए उŽारदायी कारक जनसं□या की तीव्र वृद्धि को ही माना जाता है। क–त्त्क के बाद इस क्षेत्र की जनसं□या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। क––क में चौमू तहसील की जनसं□या ख्ब्त्–भ्प थी जो ख्क में बढ़कर फ्ख्ब्त्त हो गयी अर्थात् दस वर्ष में कुल जनसं□या में स्त्रत्त्ब की वृद्धि हुई है। बढ़ती जनसं□या के दबाव के कारण कृषि विस्तार के लिए वन एवं चरागाह क्षेत्रों का विनाश, अधिक उत्पादन के लिए रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के प्रयोग आदि के कारण असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हुई है। जैविक तथा अजैविक संसाधनों के अतिदोहन का जनसं□या वृद्धि एक मु□य कारण है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव पारिस्थितिक असन्तुलन के रूप में प्रकट हुआ है।

(v) जैव विविधता का विनाश : विभिन्न पेड़-पौधे, जीव-जन्तुओं तथा सूक्ष्म जीवाणुओं की अनेक प्रजातियाँ इस क्षेत्र से विलुप्त प्राय: होती जा रही हैं। वनों के विनाश के कारण वनीय क्षेत्र में रहने वाले जीव-जन्तु दूसरे वनीय क्षेत्रों में पलायन कर गए हैं तथा अधिकतर नष्ट हो चुके हैं, जिसके कारण इस क्षेत्र की खाद्य शृंखला और ऊर्जा प्रवाह पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। जैव विविधता का विनाश क–त्त्क के बाद जनसं□या की तीव्र वृद्धि के कारण सर्वाधिक हुआ है। वर्तमान में इस क्षेत्र के संकटापन्न प्राणी फा□ता (कमेड़ी), खरगोश, गिद्ध आदि हैं।

(vi) जैव आनुवांशिकी में परिवर्तन : चौमू तहसील में कृषि क्षेत्र का विस्तार वनीय एवं चरागाह क्षेत्रों में होने के कारण वनस्पति तथा वन्य जीवों के दूसरे क्षेत्रों की और प्रतिस्थापन के कारण उनकी जैविक प्रतिरोधक क्षमता का ह्रास हुआ है, जिसके कारण भी इस क्षेत्र में जैव विविधता पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। जैव विविधता पारिस्थितिकी का महŽवपूर्ण कारक है इसमें परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रभाव पारिस्थितिक असन्तुलन के रूप में प्रकट हुआ है।

(vii) कृषि प्रतिरूप में परिवर्तन : चौमू तहसील में क–त्त्क के बाद कृषि प्रतिरूप में पूर्णतया परिवर्तन आया है। इससे पूर्व कम जनसं□या के कारण केवल खाद्यान्न फसलों का उत्पादन किया जाता था, जिनमें गेहूँ, जौ, बाजरा, मक्का मु□य फसलें उत्पादित की जाती थीं। लेकिन इसके बाद भौतिकवादी दृष्टिकोण, जनसं□या वृद्धि, नकदी फसलों का उत्पादन, व्यावसायिक फसलोत्पादन पर बल आदि के कारण चौमू तहसील का फसल प्रारूप परिवर्तित हो गया है। वर्तमान में यहाँ के किसान केवल अपने परिवार की आवश्यकतानुसार

ही खाद्यान्न फसलों का उत्पादन करते हैं तथा अधिकतर भूमि पर मूंगफली, सरसों, सÇजयाँ जैसे टमाटर, मिर्ची, गोबी, बैंगन, भिण्डी, टिण्डा, ग्वार की फली आदि फसलों का उत्पादन कृषि उपज मण्डी में बेचने के दृष्टिकोण से किया जाता है। एक वर्ष में तीन-तीन फसलों का उत्पादन किया जाता है, जिसके कारण भूमि को परती भी नहीं छोड़ा जाता है। मिट्टी की उत्पादकता का ह्रास हो रहा है। रासायनिक खाद एवं कीटनाशक, पीड़कनाशक दवाओं का अधिक उपयोग किया जा रहा है। ऐसी फसलों में हर दूसरे-तीसरे दिन सिंचाई की जाती है जिसके कारण भू-जल का अतिदोहन किया जा रहा है। इन सभी क्रियाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव पारिस्थितिक असन्तुलन के रूप में प्रकट हुआ है।

(viii) प्राकृतिक संसाधनों का अनियोजित दोहन : मानवीय जीवन की प्रगति विकास तथा अस्तÇव संसाधनों पर ही निर्भर करता है। भूमि, सूर्यातप, पवन, जल, वन, वन्य प्राणी आदि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग मानव प्राचीन काल से ही करता आ रहा है। लेकिन चौमू तहसील में विगत दो दशकों में जनसं□या की तीव्र वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों का जिसके अविवेकपूर्ण तथा अनियोजित अतिदोहन किया जा रहा है, परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का गुणात्मक तथा मात्रात्मक दृष्टि से ह्रास हुआ है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव पारिस्थितिक असन्तुलन के रूप में उभरा है।

इस क्षेत्र में पारिस्थितिक असन्तुलन की स्थिति के लिए स्वयं मानव जि□मेदार है जिसने अपने सीमित स्वार्थी की पूर्ति के लिए एक ऐसा चक्र विकसित कर दिया है जिसका सर्वाधिक दुष्प्रभाव भी स्वयं मानव पर ही पड़ा है।

अध्ययन क्षेत्र में पर्यावरण अवनयन को कम करने के लिए सुझाव

शोध अध्ययन चौमु जनपद में पर्यावरण अवनयन के प्रभावों का मूल्यांकन करते हुए शोधार्थी द्वारा पर्यावरणीय समस्याओं को कम करने के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत किया गये हैं-

- प्रस्तुत शोध् में सभी पर्यावरणीय समस्याओं की जड़ तीव्र जनसंख्या वृद्धि है, क्योंकि जनसंख्या ही सभी संसाधनों को गति प्रदान करता है लेकिन जब आवश्यकता से बढ़ने पर घातक होगा इसलिए जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रण करके पर्यावरणीय अवनयन की समस्या कम किया जा सकता है।
- पर्यावरण अवनयन की समस्या को कम करने में वनों का विनाश प्रमुख कारक हैए क्योंकि वनों से सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। शोधार्थी वनों के विकास के लिए सामाजिक वानिकी कार्यक्रमए वृक्षारोपणए जैविक कृषि अन्य भूमि पर वृक्षों का रोपण काय्र महत्वपूर्ण माना है।
- जनसंख्या के भरण पोषण के लिए कृषि का विकास आधार है । बिना कृषि विकास से लोगों का भोजन,आवास, कपड़ा आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं की जा सकती है। इसलिए कृषि विकास का पर्यावरण अवनयन पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करके टिकाऊ, सपोषण कृषि विकास नीति को अपनाना चाहिए।

- अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक एवं नगरीकरण की गति धीमी है फिर भी औद्योगिक क्षेत्रों का सभी नियोजित व्यवस्था न होने पर अनेक पर्यावरणीय समस्या उत्पन्न होती है। इस प्रकार उद्योगों एवं नगरीकरण के बीच सन्तुलित कार्य को अपनाकर विकास को आधार प्रदान करें। जिससे पर्यावरणीय समस्याए कम हो सके।
- मानव के बढ़ते प्रौद्योगिकी तकनीक आर्थिक विकास के आधार हैए लेकिन उनका दीर्घकालीन प्रभाव मानव सहित सभी जीवधारियों के लिए अभिशाप भी है, क्योंकि मानव बढ़ते तकनीकी ज्ञान जैसे प्लास्टिक के सामान, इलेक्ट्रानिक यन्त्र, रासायनिक पदार्थ, अणु परीक्षण, संचार के साधन, मूलभूत एवं अपशिष्ट पदार्थ, ठोस अपशिष्ट के द्वारा पर्यावरण अवनयन की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिससे प्राकृतिक तत्व अपने मूल तत्व से समाप्त हो जा सकते है जैसे जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, अपशिष्ट प्रदूषण आदि को मानवीय क्रियाओं में सन्तुलन स्थापित करके बचाया जा सकता है।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग से संगठनो के द्वारा पर्यावरण अवनयन की समस्या का समाधान किया जा सकता है।

सन्दर्भ

* डी.पी.आर. : राजनोता जलग्रहण संखया, मरूधरा अकादमी, जयपुर।
* Kanan, S.K. (1996) : Utilization of Barani-Chetna Kendra, State Level Workshop on NWDPRA, Jaipur.
* Mahnot, S.C. (1993) : Soil and Water Conservation for Improving Land Management in Rajasthan, Mterco-operation. Co-ordination office, Jaipur.
* मोघे बसन्त (क–त्भ) : राजस्थान में कृषि उत्पादन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
* Significant Achievement of I.W.D.P. (1990-98) : Watershed Development and Soil Conservation Departments, Govt. of Raj., Jaipur.
* हनुमन्थ राव समिति की सिफारिशें (क––ब) : ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
* गुर्जर, आर.के. (क––ख) : इन्दिरा गाँधी नहर क्षेत्र का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
* जाट, बी.सी. (ख) : जलग्रहण प्रबन्धन, पोइन्टर पZिलशर्स, जयपुर।
* मान, मानसिंह (ख्ब) : माही बजाज सागर परियोजना बाँसवाड़ा के सिंचित क्षेत्र के विकास का स्तर : एक भौगोलिक विश्लेषण। (Proceeding of XXXIIth RGA,. Ajmer.

* Gurjar, R.K. & Jat, B.C. (2006) : Assess of the Level of development through watershed programme, Annals of Rajasthan Geographical Association.

Corresponding Author

*** डॉ शंकर लाल चौपड़ा**

सहायक आचार्य– भूगोल

सेठ आरएल सहरिया राजकीय पीजी महाविधालय

कालाडेरा, जयपुर, राजस्थान

Email- chopradrsl@gmail.com, Mobile- 9636847907